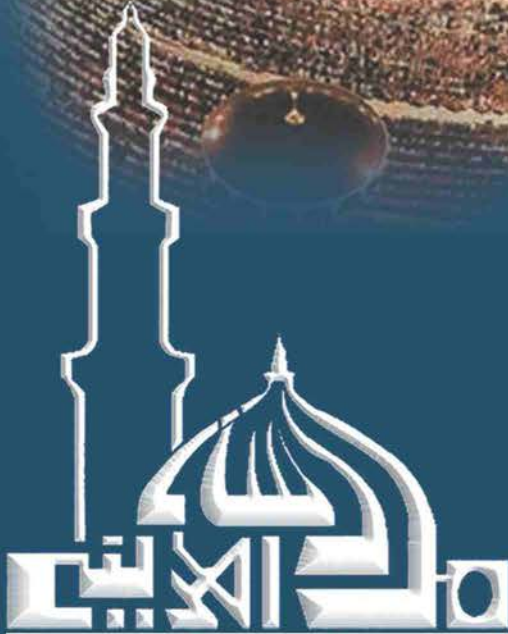


कुरआने पाक सहीह मख़ारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई काइदा



Madani Qaidah (Hindi)

मदनी काइदा



पेशकश : मजलिसे मद्रसतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

DAWAE ISLAMI
INDIA

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الصلوة والسلام عليك يا رسول الله وعلى آلك وأصحابك يا حبيب الله

कुरआने पाक सहीह मखारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई काइदा

मदनी काइदा

पेशकश : मजलिसे मद्रसतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मक़सद : मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है । *إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ*

नाम _____

मद्रसा _____

दरजा नम्बर _____

पता _____

फ़ोन नम्बर _____

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ؕ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
रहमत नाज़िल फ़रमा! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे
मदीना
व बक़ीअ
व मफ़िरत



13 शब्बालुल मुकर्रम 1428 हि.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला (मदीनी काइदा) मजलिसे मद्रसतुल मदीना (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में पेश किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी इन्डिया)ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मकतबतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मकतबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

+91-9898732611 hind.printing92@gmail.com

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मकतबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

पहले इसे पढ़िये

येही है आरजू ता'लीमे कुरआं आम हो जाए
तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद, अल्लाह तआला का ऐसा कलाम है जो कि रुशदो हिदायत और इल्मो हिक्मत का अनमोल खज़ाना है। नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :
خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ या'नी तुम में बेहतरीन शख्स वोह है, जिस ने कुरआन को सीखा और दूसरों को सिखाया। (صحيح البخاري، كتاب فضائل القرآن، باب خيركم... الخ، الحديث ٥٠٢٤، ص ٣٥)

أَلْحَسَدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ! आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक **दावते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम तालीमे कुरआन आम करने के लिये हिफ़ज़ो नाज़िरा के 5445 (पांच हज़ार चार सौ पैतालीस) मदारिस बनाम **"मद्रसतुल मदीना"** काइम हैं। और ता दमे तहरीर कमो बेश 244318 (दो लाख चव्वालीस हज़ार तीन सौ अठारह) बच्चे और बच्चियों को हिफ़ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त तालीम दी जा रही है। इसी तरह मुख़्तलिफ़ मसाजिद वगैरा में उमूमन रोज़ाना बाद नमाज़े इशा बड़े इस्लामी भाइयों के लिये **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) की तरकीब होती है जिन में इस्लामी भाई दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम सीखते हैं नीज़ सुन्नतें और आदाब और दुआएं वगैरा याद करते हैं। ता दमे तहरीर 32359 (बत्तीस हज़ार तीन सौ उन्सठ) मक़ामात पर **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) लगाए जाते हैं और इस में पढ़ने वालों की तादाद 191558 (एक लाख इक्यानवे हज़ार पांच सौ अठ्ठवन) है इसी तरह मुख़्तलिफ़ घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना मदारिस बनाम **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ात) भी काइम किये जाते हैं जिन में इस्लामी बहनें दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम सीखती हैं नीज़ सुन्नतें और आदाब और दुआएं वगैरा याद करती हैं ता दमे तहरीर सिर्फ़ इस्लामी बहनों के 8816 (आठ हज़ार आठ सौ सोलह) मक़ामात पर **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ात) लगाए जाते हैं और इस में पढ़ने वालियों की तादाद 62546 (बासठ हज़ार पांच सौ छयालीस) है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! मद्रसतुल मदीना के तजरिबे कार आसातिजए किराम ने कुरआने पाक को आसान अन्दाज में सीखने के लिये **मदनी काइदा** मुरत्तब किया है। “**मदनी काइदे**” में छोटी और बड़ी उम्र के तलबा व तालिबात के लिये तज्वीद के बुन्यादी क़वाइद हत्तल इमकान आसान अन्दाज में पेश किये गए हैं ताकि बच्चे / बच्चियां और इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें आसानी से दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ना सीख जाएं जय्यिद कुरा हज़रात كَتَمَعَهُ اللهُ تَعَالَى ने इल्मे तज्वीद के हवाले से बहुत एह्तियात के साथ मदनी काइदे पर नज़रे सानी फ़रमाई है।

मदनी काइदे के तरीक़ए तदरीस के लिये रहनुमाए मुदर्रिसीन और कुरआने पाक हिफ़ज़ो नाज़िरा पढ़ाने के लिये **कुरआन सीखें और सिखाएं** कुतुब मक्तबतुल मदीना से शाएअ की गई हैं जिस में मदनी काइदे की तख़्तियां और कुरआने पाक पढ़ाने का तरीका बताया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! दावते इस्लामी के आई टी डिपार्टमेन्ट ने मदनी काइदे के नाम से **एप्लीकेशन** भी बनाई है जो दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड की जा सकती है।

अल्लाह पाक से दुआ है कि हमें अमीरे अहले सुन्नत बानिये दावते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के अता कर्दा इस मदनी मक्सद “**मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है** **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**” के तहत अपनी इस्लाह के लिये नेक कामों पर अमल करने और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये अशिक़ाने रसूल के साथ **मदनी काफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और **दावते इस्लामी** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

मजलिसे मद्रसतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

23 फरवरी 2022

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हुरूफ़ के मख़ारिज

➤ मख़ज का लुगवी मा'ना "निकलने की जगह" है और इस्ति'लाह तजवीद में जिस जगह से हर्फ़ अदा होता है उसे "मख़ज" कहते हैं। मख़ारिज की ता'दाद के बारे में अइम्माए किराम के मुख़लिफ़ अक़वाल हैं हज़रते इमाम ख़लील बिन अहमद फ़राहीदी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ और अक्सर अइम्माए किराम के नज़दीक मख़ारिज की ता'दाद सत्तरह (17) है।

मख़ज का नाम	हुरूफ़	हुरूफ़ के अल्काब	मख़ारिज
हल्की मख़ज	ه، ع	हुरूफ़े ह-लकिय्यह	हल्क के नीचे वाले हिस्से से अदा होते हैं।
" "	ح، ع	" "	हल्क के दरमियान वाले हिस्से से अदा होते हैं।
" "	خ، غ	" "	हल्क के ऊपर वाले हिस्से से अदा होते हैं।
लिसानी मख़ारिज	ق	हुरूफ़े ल-हविय्यह	ज़बान की जड़ और तालू के नर्म हिस्से से अदा होता है।
" "	ك	" "	ज़बान की जड़ और तालू के सख़्त हिस्से से अदा होता है।
" "	ج، ش، ی	हुरूफ़े श-जरिय्यह	ज़बान के दरमियान और तालू के दरमियान से अदा होते हैं।
" "	ض	हर्फ़े हाफिय्यह	ज़बान की करवट और ऊपर की दाढ़ों की जड़ से अदा होता है।
" "	ل	हुरूफ़े त-रफिय्यह	ज़बान का कनारा और ज़वाहिक से सनाया तक के मसूढ़ों से अदा होता है।
" "	ن	" "	ज़बान का कनारा और अन्याब से सनाया तक के दांतों की जड़ों से अदा होता है।
" "	ر	" "	ज़बान की नोक और मुक़ाबिल के तालू से अदा होता है।
" "	ط، د، ت	हुरूफ़े नित्दिय्यह	ज़बान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से अदा होते हैं।
" "	ظ، ذ، ث	हुरूफ़े लि-सविय्यह	ज़बान का सिरा और ऊपर के दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
" "	ص، ز، س	हुरूफ़े स-फ़ीरियह	ज़बान की नोक और दोनों दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
श-फ़वी मख़ारिज	ف	हुरूफ़े श-फ़विय्यह	ऊपर के दांतों के कनारे और निचले होंट के तर हिस्से से अदा होता है।
" "	ب، م، و	" "	"ب" दोनों होंटों के तर हिस्से से, "م" दोनों होंटों के खुश्क हिस्से से और "و" दोनों होंटों की गोलाई से अदा होता है।
जौफ़ी मख़ज	हुरूफ़े महा (ا، و، ی)		जौफ़े दहन : या 'नी मुहं का ख़ला।
	ख़ैशूम (नाक का बांसा)		येह गुन्ना का मख़ज है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (1) : हुरूफे मुफ़दात

- हुरूफे मुफ़दात या 'नी हुरूफे तहज्जी 29 हैं।
- हुरूफे मुफ़दात को तज्वीद व क़िराअत के मुताबिक़ अरबी लहजे में अदा करें उर्दू तलफ़ुज़ से परहेज़ करें या 'नी **طَوَّءَ، طَوَّءَ، طَوَّءَ، طَوَّءَ، طَوَّءَ** वग़ैरा हरगिज़ न पढ़ें बल्कि **طَا، طَا، طَا، طَا، طَا** पढ़ें।
- इन 29 हुरूफ़ में सात "7" हुरूफ़ ऐसे हैं जो हर हालत में पुर या 'नी मोटे पढ़े जाते हैं इन्हें हुरूफ़े मुस्ता लिया कहते हैं और वोह येह हैं **ق، غ، ظ، ط، ض، ص، خ** इन का मज्मूआ **حُصْ صَغُطِ قَطْ** है।
- होंटों से सिर्फ़ चार हुरूफ़ अदा होते हैं। - **و، م، ف، ب**। इन के इलावा बाकी हुरूफ़ पर होंट न हिलने दें।
- इन तीन हुरूफ़ **ز، س، ص** को अदा करते वक़्त सीटी की तरह तेज़ आवाज़ निकलती है इस लिये इन हुरूफ़ को हुरूफ़े सफ़ीरिया या 'नी सीटी वाले हुरूफ़ कहते हैं।

ا (أَلِف)	ب (بَا)	ت (تَا)	ث (ثَا)	ج (جِيم)
ح (حَا)	خ (خَا)	د (دَا)	ذ (ذَا)	ر (رَا)
ز (زَا)	س (سَيْن)	ش (شَيْن)	ص (صَاد)	ض (ضَاد)
ط (طَا)	ظ (ظَا)	ع (عَيْن)	غ (غَيْن)	ف (فَا)
ق (قَا)	ك (كَاف)	ل (لَام)	م (مِيم)	ن (نُون)
و (وَا)	ه (هَا)	هَمْزَة (هَمْزَة)	ي (يَا)	

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ؎
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (2) : हुरूफ़े मुरक्कबात

- ▶ दो "2" या इस से जाइद हुरूफ़ मिल कर एक मुरक्कब बनता है ।
- ▶ मुरक्कब हुरूफ़ को मुफ़्द हुरूफ़ की तरह अलग अलग पढ़ें ।
- ▶ इस सबक में भी तलफ़ुज की अदाएगी का खास खयाल रखते हुए मा'रुफ़ या 'नी अरबी लहजे में पढ़ें ।
- ▶ जब दो या इस से जाइद हुरूफ़ मिला कर लिखे जाते हैं तो उन की शकल कुछ बदल जाती है अक्सर हुरूफ़ का सर लिखा जाता है और धड़ छोड़ दिया जाता है ।
- ▶ जो हुरूफ़ मुरक्कब होने की हालत में एक जैसे लिखे जाते हैं उन की नुक्तों के रद्दो बदल से पहचान करें ।

ता	ना	बा	ला	ला	ा
قا	फा	सा	शा	था	या
صا	غا	عا	हा	खा	जा
का	हा	मा	ظा	طا	ضا
طب	كف	كث	كت	كب	لب
قل	فل	ضل	صل	شل	سل
ظن	طن	كن	كل	غل	عل

جد خد حد عد غد خذ

خز حر بر ير ظر ظر

بم نم تم يم شم شم

لج عج حج ميج بع يغ

نص فص قض بس يس تس

فق تقق شق سق عق حق

لك فك فك كو هو مو

بي ني تي يي وئ

بته نته تته يته عطه فظه

يلب بهم بعد عبد حمد هلك

يهب خطف ثمن حسن فعة سخط

خلق	فلق	علق	نصر	قتل	يلج
تجد	طبع	بلغ	نفس	جنت	سئل
قسط	صفت	شمس	خشى	غير	غبر
مطر	عشر	عسر	ظلل	شكر	بسم

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (3) : हरकात

- ▶ हरकत की जम्अ हरकात है। ज़बर —, ज़ेर — और पेश — को हरकात कहते हैं। ज़बर और पेश हर्फ के ऊपर जब कि ज़ेर हर्फ के नीचे होता है।
- ▶ जिस हर्फ पर कोई हरकत हो उसे मुतहर्रिक कहते हैं।
- ▶ ज़बर — मुंह और आवाज़ को खोल कर, ज़ेर — आवाज़ को नीचे गिरा कर और पेश — होंटों को गोल कर के अदा करें।
- ▶ हरकात को बिगैर खींचे बिगैर झटका दिये मा 'रूफ़ पढ़ें।
- ▶ "أ" पर कोई हरकत या जज़म आ जाए तो उसे हमज़ह "أ" पढ़ें।
- ▶ "ر" पर ज़बर या पेश हो तो ر को पुर और "ر" के नीचे ज़ेर हो तो "ر" को बारीक पढ़ें।

أ	إ	أ	ب	ب	ب
ر	ر	ر	ث	ث	ث

ح	ح	ح	ج	ج	ج
د	د	د	خ	خ	خ
ر	ر	ر	ذ	ذ	ذ
س	س	س	ز	ز	ز
ص	ص	ص	ش	ش	ش
ط	ط	ط	ض	ض	ض
ع	ع	ع	ظ	ظ	ظ
ف	ف	ف	غ	غ	غ
ك	ك	ك	ق	ق	ق
م	م	م	ل	ل	ل
و	و	و	ن	ن	ن

ه

ه

ه

ه

ه

ه

ه

ه

ه

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (4)

- इस सबक को रवां पढ़ें ।
- हरकात की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें ।
- मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह फ़र्क करें ।

ط

ط

ط

ط

ط

ط

ذ

ذ

ذ

ذ

ذ

ذ

ض

ض

ض

ض

ض

ض

س

س

س

س

س

س

ص

ص

ص

ص

ص

ص

ق

ق

ق

ق

ق

ق

ح	ح	ح	ح	ح	ح
ع	ع	ع	ع	ع	ع
خ	خ	خ	خ	خ	خ
ب	ب	ب	ب	ب	ب
و	و	و	و	و	و
ل	ل	ل	ل	ل	ل
ر	ر	ر	ر	ر	ر
ش	ش	ش	ش	ش	ش

يَا خَبِيرُ

सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनने के लिये चलते फिरते पढ़ते रहें ।

(मसाइलुल कुरआन, स. 290)

इल्म के पांच दर्जात

- (1) खामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना
- (4) जो सीखा उस पर अमल करना (5) जो इल्म हासिल हो उसे दूसरों तक पहुंचाना ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (5) : तन्वीन

- ▶ दो ज़बर ۞, दो ज़ेर ۞ और दो पेश ۞ को तन्वीन कहते हैं। जिस हर्फ पर तन्वीन हो उसे मुन्व्वन कहते हैं।
- ▶ तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आखिर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की तरह होती है। जैसे : اُنْ، اِنْ، اُ-اُنْ
- ▶ तन्वीन के हिज्जे इस तरह करें : مَن दो ज़बर ۞ : مِمْ : مِمْ दो ज़ेर ۞ : مِمْ : म् : म् दो पेश ۞ : म् : म्
- ▶ ज़बर की तन्वीन के बाद कहीं "ا" और कहीं "ى" लिखा जाता है हिज्जे करते वक़्त उस का नाम न लें।

ط	ط	طا	ٲ	ت	تا
ذ	ذ	ذا	ز	ز	زا
ض	ض	ضا	ظ	ظ	ظا
س	س	سا	ش	ش	شا
ك	ك	كا	ص	ص	صا



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ؕ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ؕ

सबक नम्बर (6)

- इस सबक को हिज्जे और रवां दोनों तरीकों से पढ़ें ।
- हरकात, तन्वीन और तमाम हुरूफ़ बिल खुसूस हुरूफ़े मुस्ता लिया की दुरुस्त अदाएगी का खास खयाल रखें ।
- हिज्जे इस तरह करें : **مَلِكٌ** = कं पेश काफ, **مَلٍ** = ल जेर लाम, **مَ** जबर मीम : **مَلِكٌ** :

نَزَلَ	خَلَقَ	صَدَقَ	يَدَاكَ	بَلَغَ	طَبَعَ
جَعَلَ	فَعَلَ	نَظَرَ	ذَكَرَ	كَسَبَ	أَبَلَ
رُسِلَ	صُحِفَ	ثُلُثُ	سُدُسُ	حُرْمٌ	رُبْعٌ
حَمِدًا	خَطِفَ	مَلِكٍ	تَزِدُ	تَجِدُ	يَلِجُ
قُتِلَ	سُئِلَ	قُرِئَ	قَمَرٌ	كَبِيرٌ	حُشِرَ
أَحَدًا	مَرَضًا	عَبَلًا	هُدًى	طَوًى	قُرًى
مَسَدٍ	ثَنِينَ	سَخَطٍ	ظَلِيلٍ	فِئَةٍ	عُنُقٍ
نَفَرٌ	صَمَدٌ	غَضَبٌ	لَعَبٌ	أَذُنٌ	كُتُبٌ

دَرَجَةٌ قِرْدَةٌ عَلَقَةٌ سَفْرَةٌ شَجَرَةٌ قَتْرَةٌ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

शबक नम्बर (7) : हुरूफे मद्दाह

- इस अलामत "و" को जज़्म कहते हैं। जिस हर्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- साकिन हर्फ़ अपने से पहले मुतहर्रिक हर्फ़ से मिल कर पढ़ा जाता है।
- हुरूफे मद्दाह तीन हैं। الف، وآو، یا۔
- الف से पहले ज़बर हो तो الف मद्दा होगा जैसे بَا, پَا साकिन "و" से पहले पेश हो तो وَ से पहले पेश होगा जैसे بِي, پِي साकिन "ی" से पहले ज़ेर हो तो یَا मद्दा होगा जैसे بِي, پِي
- हुरूफे मद्दा को एक अलिफ़ या 'नी दो हरकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- हिज्जे इस तरह करें। بَا = بَا, پَا ज़बर بَا = بَا, پَا, بِي, پِي, بِي, پِي ज़ेर بَا = بَا, پَا, بِي, پِي, بِي, پِي

بَا	بُو	بِي	بِئَا	تَا	تُو	تِي
بِئَا	تُو	بِئِي	جَا	جُو	جِي	جِي
حَا	حُو	حِي	خَا	خُو	خِي	خِي
دَا	دُو	دِي	ذَا	ذُو	ذِي	ذِي
رَا	رُو	رِي	زَا	زُو	زِي	زِي
سَا	سُو	سِي	شَا	شُو	شِي	شِي

مَا صُوِّصِي صَا ضُوُّ ضِي

كَا طُوُّ طِي ظَا ظُوُّ ظِي

عَا عُوُّ عِي غَا غُوُّ غِي

فَا فُوُّ فِي قَا قُوُّ قِي

كَا كُوُّ كِي لَا لُوُّ لِي

مَا مُوُّ مِي نَا نُوُّ نُي

وَا وُوُّ وِي هَا هُوُّ هِي

ا اُوُّ اِي يَا يُوُّ يِي

يَا عَلِيمُ

7 बार और हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सूरा अलम नशरह 21 मर्तबा पढ़ कर पानी पर दम कर के जिस बच्चे या बड़े का हाफ़िज़ा कमज़ोर हो उस को पिलाइये ।

हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाएगा ।

(बीमार आबिद, स० 41)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ؕ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ؕ

सबक नम्बर (8) : खड़ी हरकात

- खड़े ज़बर — ۱ , खड़े ज़ेर — ۲ और उल्टे पेश — ۳ को खड़ी हरकात कहते हैं ।
- खड़ी हरकात हुरूफ़े महा के काइम मक़ाम हैं इस लिये खड़ी हरकात को भी हुरूफ़े महा की तरह एक अलिफ़ या 'नी दो हरकात के बराबर खींच कर पढ़ें ।
- इस सबक में मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह फ़र्क करें ।

ط	ط	ط	ث	ث	ث
ذ	ذ	ذ	ز	ز	ز
ض	ض	ض	ظ	ظ	ظ
س	س	س	ش	ش	ش
ك	ك	ك	ص	ص	ص
ه	ه	ه	ق	ق	ق
ع	ع	ع	ح	ح	ح

د	د	د	ع	ع	ع
ع	ع	ع	خ	خ	خ
م	م	م	ب	ب	ب
ف	ف	ف	و	و	و
ن	ن	ن	ل	ل	ل
ج	ج	ج	ر	ر	ر
ی	ی	ی	ش	ش	ش

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (9) : हुरूफ़े लीन

- ▶ हुरूफ़े लीन दो (2) हैं **يا** और **واو** ।
- ▶ **يا** साकिन से पहले **जबर** हो तो **واو** लीन होगा जैसे **جَوَّ**, **يا** साकिन से पहले **जबर** हो तो **يا** लीन होगा जैसे **جِي** ।
- ▶ हुरूफ़े लीन को बिगैर खींचे बिगैर झटका दिये नरमी से मा 'रूफ़ पढ़ें ।
- ▶ **بَوَّ**, **بِي** = **بِي** जबर **بَا** या **بِي**, **بَوَّ** जबर **بَا** वा = **بَوَّ** । हिज्जे इस तरह करें ।

بُو بِي تُو تِي ثُو ثِي

جُو جِي حُو حِي خُو خِي

دُو دِي ذُو ذِي رُو رِي

زُو زِي سُو سِي شُو شِي

صُو صِي ضُو ضِي طُو طِي

ظُو ظِي عُو عِي غُو غِي

فُو فِي قُو قِي كُو كِي

لُو لِي مُو مِي نُو نِي

وُو وِي هُو هِي اُو اِي

يُو يِي

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (10)

- इस सबक को हिज्जे और रवां दोनों तरीकों से पढ़ें ।
- इस सबक में पिछले तमाम अस्बाक या 'नी हरकात, तन्वीन, हुरूफे मद्दा, खड़ी हरकात और हुरूफे लीन शामिल हैं ।
- इन तमाम क्वाइद की अदाएगी और पहचान की पुख्तगी के साथ साथ सिहूहते लफ़्ज़ी का ख़ास ख़याल रखें बिल ख़ुसूस हुरूफे मुस्ता लिया ।
- हिज्जे करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि हर हर्फ़ को पिछले हुरूफ़ से मिलाते जाएं ।
 जैसे **مَوْضُوعَةٌ** के हिज्जे इस तरह करें :
 مَوْضُوعَةٌ = ؤ पेश ता, مَوْضُوعٌ = ع ज़बर عین, مَوْضُوءٌ = ضू पेश ضा़द आو, مَوْ ج़बर میم आو

قَالَ	كَانُوا	ذَلِكَ	هَذَا	صِرَاطٌ	قَالَ
لَهُ	نُوحِيهِ	فِيهِ	قَوْلٌ	سَوْفَ	لَهُ
لَيْسَ	طَغَى	مَتَاعًا	عَذَابًا	بَيْنَ	لَيْسَ
غَفُورًا	قِيلَ	يَوْمَ	خَوْفٍ	دَاوُدَ	غَفُورًا
رُسُلِهِ	صَوَابًا	عَلَيْهِ	إِلَيْهِ	رَسُولِهِ	رُسُلِهِ
صَلَاةً	مَقَامَهُ	مَحْفُوظٍ	رَسُولٍ	زَكَاةً	صَلَاةً
خِتَهُ					خِتَهُ

لَوْحِ حَوْلِ دِينِ بَشِيرٍ قَوْمِهِ هَدَيْنَا

بَيْنَنَا زَاهِدِينَ رَاكِعُونَ عِيسَى مُوسَى صُدُورِ

أَوَى قَوْلًا قَوْمًا مِيقَاتًا مِنْيرًا شَيْءِ

شَيْئًا هَرُونَ سَلِيمَانَ شُهُودُ قُودُ وَدُودُ

يَوْمِئِذٍ مَوْعِدُهُ كَرِيمٍ وَكَيْلٍ نُورِهِ أَرَأَيْتَ

أَفْرَأَيْتَ مَوْعِظَةً مَوْضُوعَةً مَوْادَّةً سَمِيعٌ عَزِيزٌ

يَدَايِهِ حَيْثُ غَيْبُ سَمَوَاتٍ كَلِمَاتٍ لَشَيْءٍ

قُرَيْشٍ بَابِتِنَا مَهْدًا عِلْمُ كِتَابِ سَلَامِ

أُوزِينَا أُوْتِينَا أُوْحِينَا نُوحِيهَا التَّوْنِي أَمْنَوَابِي

تُدِيرُونَهَا فَلَا تَسْبَلُوا مَا خَلَقْتُنِي فَلَا تَلُومُونِي وَلَا يُحِيطُونَ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (11) : सुकून (जज़्म)

- ▶ जैसा कि आप पीछे पढ़ चुके हैं इस अलामत “>” को जज़्म कहते हैं जिस हर्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- ▶ जज़्म वाला हर्फ़ अपने से पहले मुतहर्रिक हर्फ़ से मिल कर पढ़ा जाता है।
- ▶ हम्ज़ए साकिना (أ، ع) को हमेशा झटका दे कर पढ़ें।
- ▶ हुरूफ़े कल्कला पांच हैं د، ج، ب، ط، ق इन का मज्मूआ **قُطْبُ جَدِّ** है।
- ▶ कल्कला के मा'ना जुम्बिश और हरकत के हैं इन हुरूफ़ के अदा करते वक़्त मख़्ज में जुम्बिश सी हो जिस की वजह से आवाज़ लौटती हुई निकले।
- ▶ जब हुरूफ़े कल्कला साकिन हों तो उन में कल्कला ख़ूब ज़ाहिर होगा।
- ▶ इस सबक में हुरूफ़े कल्कला व हम्ज़ए साकिना की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें और मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाजेह फ़र्क करें।

اُط	اِط	اَط	اُت	اِث	اَت
اُد	اِذ	ا_ذ	اُز	اِز	ا_ز
اُض	اِض	ا_ض	اُظ	اِظ	ا_ظ
اُس	اِس	ا_س	اُث	اِث	ا_ث
اُك	اِك	ا_ك	اُص	اِص	ا_ص

أَهْ

إِهْ

أَهْ

أُقْ

إُقْ

أُقْ

أَعْ

إَعْ

أَعْ

أَحْ

إَحْ

أَحْ

أُدْ

إُدْ

أُدْ

أُعْ

إُعْ

أُعْ

أَغْ

إَغْ

أَغْ

أَخْ

إَخْ

أَخْ

أُمْ

إُمْ

أُمْ

أُبْ

إُبْ

أُبْ

أُفْ

إُفْ

أُفْ

أُوْ

و (و) ساकिन سے
پہلے جہر نہیں آتا

أُوْ

أُنْ

إِنْ

أُنْ

أُلْ

إِلْ

أُلْ

أُجْ

إُجْ

أُجْ

أُرْ

إِرْ

أُرْ

ي (ي) ساकिन سے
پہلے پेश نہیں آتا

أِيْ

أِيْ

أَشْ

إَشْ

أَشْ

مشق

بَلْ

مَنْ

عَنْ

إِنْ

قُلْ

لَمْ	كَمْ	هَمْ	ذُقْ	قَدْ
إِصْطَبِرْ	مُسْتَظِرْ	فَاعْفِرْ	أَعِينْ	أَعْنَابًا
زَجْرَةٌ	نُطْفَةٌ	مُدْهِنُونَ	أَبْوَابًا	فَأَفْرُقْ
يُقْرِضْ	يُعْنَى	تَجْرِي	جَمْعًا	فَتَحْهُ
مُؤْمِنِينَ	مُؤْمِنُونَ	يُؤْمِنُونَ	مُؤَصَّدَةٌ	إِقْرَأْ
شَانُ	كَاسًا	بِئْسَ	يَشَا	نَشَا
إِثْمٌ	يَبْحَثُ	أَحْيَا	أُخْرَى	إِذْهَبْ
أَشْدُدْ	إِرْكَبْ	حُشِرْتُ	نُشِرْتُ	أَحْضَرْتُ
طَهَسْتُ	فُرِجْتُ	نُسِفْتُ	يُظْلَهُونَ	يُظْهَرُ
إِصْدِرْ	بَيْنَكُمْ	بَيْنَهُمْ	فَضْلِكَ	عَلَيْهِمْ
أَعْمَالَهُمْ	أَعْمَالَكُمْ	أَيْدِيَهُمْ	يَسْتَبْدِلُ	يَسْتَفْتِحُونَ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ؕ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ؕ

सबक नम्बर (12) : नून साकिन और तन्वीन (इज़हार, इख़फ़ा)

- नून साकिन और तन्वीन के चार काइदे हैं (1) इज़हार (2) इख़फ़ा (3) इदग़ाम (4) इक्लाब ।
- (1) इज़हार : नून साकिन या तन्वीन के बा 'द हुरूफ़े हल्की में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इज़हार होगा या 'नी नून साकिन और तन्वीन में गुना नहीं करेंगे । हुरूफ़े हल्की छः " 6 " हैं और वोह येह हैं :
ع، ه، ع، ح، غ، خ
- (2) इख़फ़ा : नून साकिन या तन्वीन के बा 'द हुरूफ़े इख़फ़ा में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इख़फ़ा करें या 'नी नून साकिन और तन्वीन में गुना कर के पढ़ें । हुरूफ़े इख़फ़ा पन्दरह " 15 " हैं और वोह येह हैं :
ت، ث، ج، د، ذ، ز، س، ش، ص، ض، ط، ظ، ف، ق، ك
- नोट : इदग़ाम और इक्लाब के काइदे सबक नम्बर 14 में मौजूद हैं ।

مِنْ أَجَلٍ	مِنْ هَادٍ	مِنْ عَلَقٍ	مِنْ حَكِيمٍ
مِنْ غَفُورٍ	مِنْ خَوْفٍ	فَبِمَنْ تَبِعَ	مِنْ ثَمَرَةٍ
مِنْ جُوعٍ	مِنْ دُونِكُمْ	مِنْ ذَهَبٍ	فَإِنْ زَلَلْتُمْ
مَنْ سَفِهَهُ	مَنْ شَكَرَ	مِنْ صَالٍ	إِنْ ضَلَلْتُ
مِنْ طِينٍ	مَنْ ظَلَمَ	مِنْ فُرُوجٍ	مِنْ قَبْلِ
مِنْ كِتَابٍ	يَنْوُونَ	مِنْهُمْ	أَنْعَمْتَ

أَنْتَ

وَالْمُنْحِقَةُ

فَسَيَنْغُضُونَ

وَأَنْحَزُ

مَنْصُودٍ

يَنْصُرُونَ

نُنَشِّرُهَا

تَنْسُونَ

يَنْقُضُونَ

أَنْفُسِكُمْ

أَنْظُرُ

يُطِقُونَ

عَدْنٍ تَجْرِي

خَيْرٌ تَجِدُوهَا

عَذَابًا أَلِيمًا

مِنْكُمْ

شِهَابٍ ثَاقِبٍ

قَوْلًا ثَقِيلًا

بَلَدًا أَمِنًا

خَلْقٍ جَدِيدٍ

فَصَبْرٌ جَمِيلٌ

نُوحًا هَدَيْنَا

بِحُسْنٍ دَرَاهِمَ

كَأَسَادِهَا قَا

جُرْفٍ هَارٍ

يَتَّبِعُهَا مَقْرِبَةٍ

سِرَاعًا ذَلِكَ

سَمِيعٌ عَلِيمٌ

يَوْمَئِذٍ زُرْقًا

صَعِيدًا زَلَقًا

خُلِقَ عَظِيمٌ

بِقَلْبٍ سَلِيمٍ

قَوْلًا سَدِيدًا

قَرَضًا حَسَنًا

عَذَابٌ شَدِيدٌ

بِأَسِّ شَدِيدٍ

مُلِقٍ حَسَابِيَةٍ

رِجَالٌ صَدَقُوا

عَمَلًا صَالِحًا

تَوَمَّا غَيْرِكُمْ

مُسْفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ

عَدَابًا ضِعْفًا

قَلِيلَةً غَلَبَتْ

سَمَوَاتٍ طَبَاقًا

سَبْحًا طَوِيلًا

عَلِيمٌ خَبِيرٌ

نَفْسٍ ظَلَمَتْ

سَحَابٍ ظَلَمَتْ

رَفْرَفٍ خُضِرٍ

ثَمَنًا قَلِيلًا

سُبُلًا فَجَاجًا

تَوَمَّا فَاسِقِينَ

كِرَامًا كَاتِبِينَ

رَسُولٍ كَرِيمٍ

فَتَحُّ قَرِيبٍ

يَا سَمِيعُ

100 बार रोज़ाना जो पढ़े और इस दौरान गुफ्तगू न करे

और पढ़ कर दुआ मांगे ।

ان شاء الله عز وجل जो मांगेगा पाएगा ।

(40 रूहानी इलाज, स. 7)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (13) : तश्दीद

- ▶ तीन दन्दान " ۞ " वाली शकल को तश्दीद कहते हैं। जिस हर्फ पर तश्दीद हो उसे मुशहद कहते हैं।
- ▶ मुशहद हर्फ को दो मर्तबा पढ़ें एक मर्तबा अपने से पहले वाले मुतहर्रिक हर्फ से मिला कर और दूसरी मर्तबा खुद अपनी हरकत के मुताबिक ज़रा रुक कर।
- ▶ नून मुशहद और मीम मुशहद में हमेशा गुन्ना होता है गुन्ना के मा'ना नाक में आवाज़ ले जाना है गुन्ना की मिक्दार एक अलिफ़ के बराबर है।
- ▶ जब हुरूफ़े कल्कला मुशहद हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करें।
- ▶ पहला हर्फ़ मुतहर्रिक, दूसरा हर्फ़ साकिन और तीसरा हर्फ़ मुशहद हो तो अक्सर मर्तबा (हमेशा नहीं) साकिन हर्फ़ को छोड़ देंगे और मुतहर्रिक हर्फ़ को मुशहद हर्फ़ से मिला कर पढ़ेंगे जैसे عَبَدْتُمْ (को عَبَّئْتُمْ पढ़ेंगे)
- ▶ इस सबक में तश्दीद की मश्क़ के साथ साथ मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाजेह फ़र्क़ करें।

اَطَّ	اِطَّ	اَظَّ	اُتَّ	اِتَّ	اَتَّ
اُذَّ	اِذَّ	اَذَّ	اُزَّ	اِزَّ	اَزَّ
اُضَّ	اِضَّ	اَضَّ	اُظَّ	اِظَّ	ا_ظَّ
اُسَّ	اِسَّ	اَسَّ	اُثَّ	اِثَّ	ا_ثَّ
اُكَّ	اِكَّ	ا_كَّ	اُضَّ	اِضَّ	ا_ضَّ
اُهَّ	اِهَّ	ا_هَّ	اُقَّ	اِقَّ	ا_قَّ

أَح	إَح	عَاح	أَح	إَح	أَح
أَدَّ	إَدَّ	عَادَّ	أَدَّ	إَدَّ	أَدَّ
أَبَّ	إَبَّ	عَابَّ	أَبَّ	إَبَّ	أَبَّ
أَوَّ	إَوَّ	عَاوَّ	أَوَّ	إَوَّ	أَوَّ
أَلَّ	إَلَّ	عَالَّ	أَلَّ	إَلَّ	أَلَّ
أَزَّ	إَزَّ	عَازَّ	أَزَّ	إَزَّ	أَزَّ
أَشَّ	إَشَّ	عَاشَّ	أَشَّ	إَشَّ	أَشَّ
رَبَّ	رَبِّي	رَبِّي	رَبِّي	رَبِّي	رَبِّي
مِنَّا	مِنِّي	مِنِّي	مِنِّي	مِنِّي	مِنِّي
وَالْتَيْنِ	بِالتَّقْوَى	بِالتَّقْوَى	بِالتَّقْوَى	بِالتَّقْوَى	بِالتَّقْوَى
مُسَخَّرَاتٍ	صَدَقَ	تَصَدَّى	الذَّرَجَاتِ	مِنَ الدَّفْعِ	وَالذِّكْرَيْنِ
الرَّحْمَنِ	نُزِلَ	فَسَنِّيئِرُهُ	وَالشَّمْسِ	نَقُصُّ	وَالصَّالِحِينَ
فَضَّلْنَا	وَالضُّحَى	وَالظُّورِ	وَالظَّيْرِ	الطَّلَاقُ	وَالظَّاهِرُ
لِلظَّالِمِينَ	سُعْرَتِ	يُوفَى	حُقَّتْ	حَقُّ	رَكْبَكَ
وَالَّذِينَ	مِمَّا	أُمَّةٍ	فَأُمَّةٍ	مَسْمَى	جَدَّتْ

وَالنَّشِيطِ	وَالنَّجْمِ	كَوْرَتْ	مُطَهَّرَةً	سُيِّرَتْ	يَذْكُرْ
لِيَدَّبُرُوا	ذُرِّيَّتَهُ	مُزْمَلٌ	مُدَّثِرٌ	عَلَى النَّبِيِّ	يَسْتَعُوْنَ
عَلِيُّونَ	يَزْكِي	مِنَ الطَّيِّبَاتِ	إِنَّ الظَّنَّ	مَدَّ الظِّلُّ	شَرَّ النَّفْثَاتِ
يُحِبُّ التَّوَّابِينَ	رَبِّ السَّمَوَاتِ	أَحَطُّ	بَسَطَتْ		
مَخْلُقِكُمْ	قَدَّ تَيْنَ	عَبَدْتُمْ	إِذْ ظَلَمْتُمْ	قَدْ دَخَلُوا	إِذْ ذَهَبَ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ؕ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ؕ

सबक नम्बर (14) : नून साकिन और तन्वीन (इदगाम, इक्लाब)

- (3) **इदगाम** : नून साकिन या तन्वीन के बा 'द हुरूफ़े यरमलून में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इदगाम होगा ।
" 6 " हैं " लाम और " रा " में बिगैर गुना के और बाकी चार हुरूफ़ में गुना के साथ । हुरूफ़े यरमलून छः " 6 " हैं और वोह येह हैं : **ي , ر , م , ل , و , ن**
- (4) **इक्लाब** : नून साकिन या तन्वीन के बा 'द हर्फ़ **ب** आ जाए तो इक्लाब होगा या 'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर इख़फ़ा करें या 'नी गुना कर के पढ़ें ।
- इदगाम के हिज्जे इस तरह करें जैसे **مَنْ يَقُولُ** = **مَنْ يَمُّ نُونِ** या **مَنْ يَمُّ** ,
مَنْ يَقُولُ = **لُ** पेश लाम , **مَنْ يَقُولُ** = **قُو** पेश ताफ़ वाو , **مَنْ يَمُّ** = **مَنْ يَمُّ** या **مَنْ يَمُّ**
- इक्लाब के हिज्जे इस तरह करें जैसे **مَنْ يَمُّ** = **مَنْ يَمُّ** , **مَنْ يَمُّ** = **مَنْ يَمُّ** ,
مَنْ يَمُّ = **مَنْ يَمُّ** , **مَنْ يَمُّ** = **مَنْ يَمُّ**

مِنْ وَدِي

مِنْ يَوْمِ

مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ

مَنْ يَقُولُ

مِنْ نُطْفَةٍ

مِنْ نَصِيرٍ

مِنْ مِثْلِهِ

مِنْ مَشْهَدٍ

يَكُنْ لَهُ

مِنْ لَدُنْهُ

مِنْ رَبِّهِمْ

مِنْ رَبِّكَ

وَجُودًا يُؤْمِنُ

هُدًى وَذِكْرَى

رَجُلٌ يَسْعَى

كِتَابًا يَلْقَاهُ

خَلَقَ نَعِيدًا

حِطَّةً نَنْفِرُكُمُ

سِرَاجًا مُنِيرًا

بِرَحْمَةٍ مِنْهُ

وَيْلٌ لِّكُلِّ

مُصِدِّ قَالِمًا

رَعُوفٌ رَحِيمٌ

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

لِيُنَبِّذَنَّ

أَنْبُئُهُمْ

مِنْ بَقْلِهَا

مِنْ بَعْدِ

كِرَامٍ بَرَرَةٍ

جَنَّةٍ بَرُورَةٍ

خَيْرٍ أَبْصِرًا

قَوْلًا بَلِيغًا

صَمِّبُكُمْ

حِلٌّ بِهَذَا

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

शबक नम्बर (15) : मीम साकिन के क़वाइद

- ▶ मीम साकिन के तीन क़ाइदे हैं। (1) इदगामे शफ़वी (2) इख़फ़ाए शफ़वी (3) इज़्हारे शफ़वी।
- ▶ (1) इदगामे शफ़वी: मीम साकिन के बा'द दूसरी मीम आ जाए तो मीम साकिन में इदगामे शफ़वी होगा या 'नी गुन्ना करेंगे।
- ▶ (2) इख़फ़ाए शफ़वी: मीम साकिन के बा'द हर्फ़ ब आ जाए तो मीम साकिन में इख़फ़ाए शफ़वी होगा या 'नी गुन्ना करेंगे।
- ▶ (3) इज़्हारे शफ़वी: मीम साकिन के बा'द हर्फ़ ब और म के इलावा कोई भी हर्फ़ आ जाए तो मीम साकिन में इज़्हारे शफ़वी होगा या 'नी गुन्ना नहीं करेंगे।

هُرْفِيهَا	كُنْتُمْ بِهِ	الْمَرَّةَ	أَنْتُمْ مُظْلِمُونَ
أَمْضَى	تَأْتِيهِمْ بِآيَاتِهِ	وَالْأَمْرُ	وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ
وَأَمْطَرْنَا	عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ	لَمْ يَلِدْ	أَتَيْنَكُمْ مِنْ كِتَابٍ
الْمَنْشُرُحُ	تَرْمِيهِمْ بِجَارِدَةٍ	لَكُمْ دِينُكُمْ	فَهُمْ مُقْتَحُونَ
أَمْصَبْنَا	وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ	وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا	وَهُمْ مُعْرِضُونَ
عَلَيْهِمْ غَضَبٌ	بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ	ذَلِكَ قَوْلُكُمْ	لَهُمْ مِنَ الْحَسَنَىٰ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (16) : तफ़्खीम व तरकीक

- ▶ तफ़्खीम के मा'ना हर्फ़ को पुर या 'नी मोटा पढ़ना और तरकीक के मा'ना हर्फ़ को बारीक पढ़ना है।
- ▶ तीन हुरूफ़ रा, लाम, अल्फ़ कभी पुर या 'नी मोटे और कभी बारीक पढ़े जाते हैं।
- ▶ अल्फ़ : अलिफ़ से पहले अगर पुर हर्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को पुर और बारीक हर्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को बारीक पढ़ें।
- ▶ लाम : इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के लाम से पहले हर्फ़ पर ज़बर या पेश हो तो इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के लाम को पुर पढ़ें और इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के लाम से पहले हर्फ़ के नीचे जेर हो तो इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के लाम को बारीक पढ़ें।
- ▶ इसमें जलालत (عَزَّوَجَلَّ) के लाम के इलावा बाकी तमाम लाम बारीक पढ़ें।
- ▶ रा को पुर पढ़ने की सूरेतें : रा पर ज़बर या पेश हो, रा पर दो ज़बर या दो पेश हों,

رَا पर खड़ा ज़बर हो, رَا साकिन से पहले हर्फ़ पर ज़बर या पेश हो, رَا साकिन से पहले आरिज़ी ज़ेर हो, रَا साकिन से पहले ज़ेर दूसरे कलिमे में हो, रَا साकिन के बा'द हुरूफ़े मुस्ता'लिया में से कोई हर्फ़ उसी कलिमे में हो।

► **رَا** को **बारीक** पढ़ने की सूरतें : رَا के नीचे ज़ेर या दो ज़ेर हों, रَا साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली उसी कलिमे में हो, रَا साकिन से पहले يَاءُ साकिना हो।

► **आरिज़ी हरकत** : कुरआने पाक में बा'ज कलिमात अलिफ़ से शुरू होते हैं और अलिफ़ पर कोई हरकत नहीं होती उन अलिफ़ पर जो भी हरकत लगा कर पढ़ेंगे वोह हरकत आरिज़ी होगी जैसे اِرْجِي के अलिफ़ के नीचे ज़ेर आरिज़ी है।

नोट : एक ही कलिमे में رَا साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली हो और इस के बा'द हर्फ़े मुस्ता'लिया हो तो रَا साकिन को पुर पढ़ेंगे जैसे مُرْصِدٍ जैसे

قَالَ	صِرَاطٍ	سِرَاجًا	كَانَ	مَلَأَ	مَفَازًا
طَالِبٌ	تَابُوا	خَالِدًا	عَابِدٌ	عَاسِقٍ	طَعَامٍ
اللَّهُ	وَاللَّهُ	فَاللَّهُ	إِنَّ اللَّهَ	هُوَ اللَّهُ	مِنَ اللَّهِ
رَسُولُ اللَّهِ	رَضِيَ اللَّهُ	قَالُوا اللَّهُمَّ	لِلَّهِ	بِاللَّهِ	بِسْمِ اللَّهِ
قُلِ اللَّهُمَّ	مَا وَلَهُمْ	إِلَّا الَّذِينَ	إِنَّ الَّذِينَ	عَلَى	صَلَوَاتٍ
رَجُلٌ	أَلَم تَرَ	رُزِقُوا	أَكْثَرُ	أَجْرًا	أَجْرٌ
إِبْرَاهِيمَ	عَرْشُ	أَمْ صَبْرًا	تَرْجِعُونَ	يُرْزَقُونَ	إِرْجِعْ
إِرْجِعُوا	إِرْجِعِي	إِرْكَعُوا	رَبِّ ارْحَمَهُمَا	رَبِّ ارْجِعُونِ	إِنْ ارْتَبْتُمْ
أَمْ ارْتَابُوا	كُلُّ فِرْقٍ	فِرْقَةٍ	مِرْصَادٍ	فِي تَرْطَائِسِ	وَالنَّهَارِ
رِجَالٌ	أَمْرٌ	فَاصِبٌ	قُمْ فَانذِرْ	خَيْرُهُ	نَذِيرُهُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सबक नम्बर (17) : महात

- ▶ मद के मा'ना दराज़ करना और खींचना है। मद के दो सबब हैं (1) हम्ज़ा ۛ (2) सुकून ۛ
- ▶ मद की छः अक्सांम हैं। (1) मद्दे मुत्तसिल (2) मद्दे मुन्फ़सिल (3) मद्दे लाज़िम (4) मद्दे लीन लाज़िम (5) मद्दे आरिज़ (6) मद्दे लीन आरिज़।
- ▶ (1) मद्दे मुत्तसिल : ह्रुफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ा उसी कलिमे में हो तो मद्दे मुत्तसिल होगा। जैसे جَاءَ
- ▶ (2) मद्दे मुन्फ़सिल : ह्रुफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ा दूसरे कलिमे में हो तो मद्दे मुन्फ़सिल होगा। जैसे فِيْ اَنْفُسِكُمْ
- ▶ मद्दे मुत्तसिल और मद्दे मुन्फ़सिल को "दो, अढ़ाई अलिफ़" या 'नी "चार या पांच हरकात" की मिक्दार तक खींच कर पढ़ें।
- ▶ (3) मद्दे लाज़िम : ह्रुफ़े मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (ۛ, ۛ) हो तो मद्दे लाज़िम होगा। जैसे جَانَ
- ▶ (4) मद्दे लीन लाज़िम : ह्रुफ़े लीन के बा'द सुकूने अस्ली (ۛ) हो तो मद्दे लीन लाज़िम होगा। जैसे عَيْنِ
- ▶ मद्दे लाज़िम और मद्दे लीन लाज़िम को तीन अलिफ़ या 'नी "छः हरकात" की मिक्दार तक खींच कर पढ़ें।
- ▶ (5) मद्दे आरिज़ : ह्रुफ़े मद्दा के बा'द आरिज़ी सुकून हो (या 'नी वक्फ़ की वज्ह से कोई हर्फ़ साकिन हो जाए) तो मद्दे आरिज़ होगा। जैसे مُسْلِمُوْنَ ○
- ▶ (6) मद्दे लीन आरिज़ : ह्रुफ़े लीन के बा'द आरिज़ी सुकून हो (या 'नी वक्फ़ की वज्ह से कोई हर्फ़ साकिन हो जाए) तो मद्दे लीन आरिज़ होगा। जैसे شَفِيْعِيْنَ ○
- ▶ मद्दे आरिज़ और मद्दे लीन आरिज़ को "एक, दो या तीन अलिफ़" या 'नी "दो, चार या छः हरकात" की मिक्दार तक खींच कर पढ़ें।
- ▶ महात के हिज्जे इस तरह करें जैसे جَائِي = ज़ैम ज़ेर جِي , ज़ेभे ज़बर ۛ = جَائِي

حَدَائِقِ

أَوْلِيَاكِ

سَيِّئَاتِ

وَالْحَيَاتِ

جَائِي

جَاءَ

هَوْلًا

يَارِضُ

قَالُوا أَمِنَّا

يَمَانِزِلَ

أَوْلِيَاءِ

قُدْرَةً

يَبْنِي إِسْرَائِيلَ	ضَالًّا	ذَابَةً	السن	الذَّاكِرِينَ
جَانُّ	مُدَّهَامَاتِنِ	أَتَجَاجِرُونَ	كَافَّةً	الْحَائِثُ
حَاجُوكَ	وَحَاجَةٌ	تَحْضُونَ	يُحَادِّثُونَ	وَالضَّالِّينَ
يَأُولِي الْأَلْبَابِ	يَتَسَاءَلُونَ	رَبِّ الْعَالَمِينَ	خَوْفٍ	قُرَيْشٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (18) : हुरूफे मुक़त्तआत

- हुरूफे मुक़त्तआत कुरआने पाक की बा'ज सूरतों के शुरूअ में आते हैं ।
- इन हुरूफ़ को मुफ़द हुरूफ़ की तरह अलग अलग इस तरह पढ़ें कि मद्दात की मिक्दार पूरी अदा हो नीज इख़फ़ा व इदग़ाम आने की सूरत में गुना भी करें ।
- **أَلِف لَامٍ مِيمٍ اللَّهُ** (1) वरल को पढ़ने के दो तरीके हैं **أَلِف لَامٍ مِيمٍ اللَّهُ** (2) वक़फ़

ص	ق	ن	ظ
صَادٌ	قَافٌ	نَوْنٌ	ظَاهَا
يس	طس	حم	الر
يَاسِيْنٌ	طَاسِيْنٌ	حَامِيْمٌ	أَلِف لَامٍ رَا
الم	المز	حم	عسق
أَلِف لَامٍ مِيْمٌ	أَلِف لَامٍ مِيْمٌ رَا	حَامِيْمٌ	عَيْنٌ سِيْنٌ قَافٌ

كَهَيَعَصْ
كَافْ هَايَاعَيْنِ صَادْ

اَلَمْ اَللّٰهُ
اَلِفْ لَامْ مِيمْ اَللّٰهُ

اَلْبَصْ
اَلِفْ لَامْ مِيمْ صَادْ

طَسَمْ
طَا سَيْنِ مِيمْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

” ا “ : जाइद अलिफ़ (19) : सबक नम्बर

✳ कुरआने पाक में बा 'ज़' जगह अलिफ़ पर गोल दाएरा “ ० ” बना होता है । ऐसे अलिफ़ को “जाइद अलिफ़” कहते हैं । इस अलिफ़ को पढ़ने या न पढ़ने की तफ़्सील यह है :
(1)..... इन छः कलिमात में “जाइद अलिफ़” को वक़फ़ (या 'नी रुकने की सूत) में पढ़ेंगे लेकिन वस्ल (या 'नी मिला कर पढ़ने की सूत) में नहीं पढ़ेंगे ।

اَنَا (हरक)	قَوَارِيْرًا (पहल) प २९, سورة الدهر, १०	السَّبِيْلًا प २२, الاحزاب, ६७	الرَّسُوْلًا प २२, الاحزاب, ६६	الظُّوْمًا प २१, الاحزاب, १०	لِكِنَّا प ३८, الكهف, १०
----------------	--	-----------------------------------	-----------------------------------	---------------------------------	-----------------------------

(2)..... कुरआने पाक के इस एक कलिमे “سَلَسِلًا (प २९, سورة الدهر, ६)” के “जाइद अलिफ़” को वक़फ़ में पढ़ना और न पढ़ना दोनों जाइज़ हैं । अलबत्ता वस्ल में इस जाइद अलिफ़ को नहीं पढ़ेंगे ।
(3)..... इन तमाम कलिमात में जाइद अलिफ़ को वस्लन (या 'नी मिला कर पढ़ने की सूत में) और वक़फ़न (या 'नी रुकने की सूत में) दोनों ए 'तिबार से नहीं पढ़ेंगे ।

مَلَايَهُ (हरक)	لَا اِلٰهَ اِلَّا الْحَيُّمِ प २३, الصَّفّت, ६८	اَفَايِن مِتّ प १७, الانبياء, ३६	اَفَايِن قَات प ४, ال عمران, १६६
لِتَتَلَوْا प ३०, الرعد, ३०	تَتُوْدًا प २०, العنكبوت, ३८ / १२, هود, ६८ प १९, الفرقان, ३८ / २७, النجم, ०६	وَمَلَايَهُمْ प ११, يونس, ८३	وَلَا اَوْضَعُوْا प १०, التوبة, ६७
وَنَبَلَوْا प २६, محمد, ३१	لِيَبْلُوْا प २६, محمد, ६	لِيَبْرُوْا بِي प २१, الروم, ३९	لَنْ نَّدَاعُوْا प १०, الكهف, १६

قَوَارِيْرًا (دوسرا)
प २९, الدهر, १६

(4)..... इन तमाम कलिमात के लफ्जे "اَبَا" में जाइद अलिफ नहीं है लिहाजा इस अलिफ को पढ़ेंगे ।

مِنْ اَبَابٍ

پ ۱۳، الرعد، ۲۷
پ ۲۱، لقنن، ۱۵

لِلْاَنَامِ

پ ۲۷، الرحمن، ۱۰

اَبَاوَا

پ ۲۳، الزمر، ۱۷

اَناسِيَّ

پ ۱۹، الفرقان، ۴۹

عَلَيْكُمْ اَلْاَنَامِلِ

پ ۴، ال عمران، ۱۱۹

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सबक नम्बर (20): मुतफर्रिक कवाइद

► इज़हारे मुत्लक: इन चार कलिमात में नून साकिन के बा'द हुरूफ़े यरमलून एक कलिमे में आने की वजह से इदगाम नहीं बल्कि इज़हारे मुत्लक होगा इस लिये इन चारों कलिमात में गुन्ना न करें ।

قِنَوَانٍ

صِنَوَانٍ

بُنْيَانٍ

دُنْيَا

► सक्तह: आवाज़ रोक कर सांस लिये बिगैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या 'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे । इन चार कलिमात में सक्तह वाजिब है सक्ते का हुक्म येह है कि मुतहर्रिक को साकिन किया जाए और दो ज़बर को अलिफ से बदल कर पढ़ा जाए ।

عَوَجًا قَيْمًا

प १५، الكهف، ①

مِنْ مَرْقِدَانَا هَذَا

प २३، يس، ⑤६

كَلَابِلَ سَكْرَانَ

प ३०، المطففين، ⑬

وَقِيلَ مَنْ سَكْرَانَ

प २९، القيمة، ⑫

► ص: कुरआने पाक में चार कलिमात सार से लिखे जाते हैं और صَاد पर बारीक भी लिखा होता है इन के पढ़ने की तफ़्सील इस तरह है: (1) और (2) में सिर्फ़ स पढ़ें, (3) में स और व दोनों पढ़ना जाइज है, (4) में सिर्फ़ स पढ़ें ।

بِصَّيْطِرٍ

प ३०، الغاشية، ⑫

أَمْهُمْ اَلْبَصَّيْطِرُونَ

प १५، الطور، ⑫

بَصَّطَةً

प ८، الاعران، ⑫

يَبْصُطُ

प २، البقرة، ⑫

- ▶ **तश्हील** : तश्हील के मा 'ना हैं नरमी करना या 'नी दूसरे हम्ज़ा को नरमी के साथ पढ़ें । कुरआने पाक में सिर्फ एक कलिमे में तश्हील वाजिब है ।
- ▶ **इमालह** : ज़बर को ज़ेर की तरफ़ और الف को ی کی तरफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं । इमालह की ر को उर्दू के लफ़्ज़ क़तरे की ر کی तरफ़ पढ़ें या 'नी ری नहीं बल्कि رے पढ़ें ।
- ▶ इमालह के हिज्जे इस तरह करें: مَجْرَبَر = مَجْرَبَر ، إِمَالَه वाली رے = مَجْرَبَر ، مَجْرَبَر هَا = مَجْرَبَر هَا جَبْر هَا الف
- ▶ **بِسْمِ الإِسْمِ الفُسُوقِ** इस कलिमे में لَام से पहले और لَام के बा 'द दोनों الف न पढ़ें बल्कि लَام को ज़ेर दे कर पढ़ें ।

بِسْمِ الإِسْمِ الفُسُوقِ
प २६ ، الحجرات ⑪

مَجْرَبَر هَا (अमल)
प १२ ، हुद ③

أَعْجَبِي وَعَدِي (नबील)
प २३ ، حَم السجده ③

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (21) : वक्फ़

- ▶ **वक्फ़** : वक्फ़ के मा 'ना **ठहरने** और **रुकने** के हैं । या 'नी जिस कलिमे पर वक्फ़ करें तो उस कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर आवाज़ और सांस दोनों को ख़त्म कर दें ।
- ▶ कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर, दो पेश, खड़ा ज़ेर, उल्टा पेश हो तो उस हर्फ़ को वक्फ़ में साकिन कर दें ।
- ▶ कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर दो ज़बर हों तो उन्हें वक्फ़ में अलिफ़ से बदल दें ।
- ▶ कलिमे के आखिर में गोल "ة" पर ख़्वाह कोई भी हरकत हो या तन्वीन उसे वक्फ़ में "ه" साकिन "ه" से बदल दें ।
- ▶ खड़ा ज़बर, हुरूफ़े महा और साकिन हर्फ़ वक्फ़ में तब्दील नहीं होते ।
- ▶ **मुशद्द हर्फ़** पर वक्फ़ की सूरत में **तश्दीद बाकी रखें** मगर हरकत को ज़ाहिर न होने दें ।
- ▶ **नून कुल्जी** : तन्वीन के बा 'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है इसे नून कुल्जी कहते हैं ।

قَوْلًا قَوْلًا	رَقَبَةً رَقَبَةً	جَارِيَةً جَارِيَةً	وَتَوَلَّى وَتَوَلَّى	مِنَ الْأُولَى مِنَ الْأُولَى	فَتَرْضَى فَتَرْضَى
وَأَنحَرَهُ وَأَنحَرَهُ	فَارْغَبْ فَارْغَبْ	فَحَدِّثْ فَحَدِّثْ	فِيهَا فِيهَا	تَهْتَدُوا تَهْتَدُوا	قَوْلِي قَوْلِي
خَيْرًا خَيْرًا	الْوَصِيَّةِ الْوَصِيَّةِ	شَيْبًا شَيْبًا	السَّمَاءِ السَّمَاءِ	مُنِيْبٍ مُنِيْبٍ	أَدْخَلُوهَا أَدْخَلُوهَا
مُيِّنٍ مُيِّنٍ	أَقْتُلُوا أَقْتُلُوا	قَدِيرٍ قَدِيرٍ	الَّذِي الَّذِي	خَيْرًا خَيْرًا	الَّذِي الَّذِي

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सबक नम्बर (22) : नमाज

- ✦ इस सबक को हिज्जे और रवां दोनों तरीकों से पढ़ें ।
- ✦ इस सबक में भी पिछले तमाम अस्बाक के क्वाइद और हुरूफ़ की अदाएगी का खास खयाल रखें बिल खुसूस मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाजेह फ़र्क करें ।
- ✦ याद रखिये ! इन हुरूफ़ में फ़र्क न करने की वजह से अगर मा'ना फ़ासिद हो गए तो नमाज़ न होगी ।

✦ तक्बीरे तहरीमा : اللَّهُ أَكْبَرُ

✦ सना : سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

✦ तअव्वुज़ : أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

► तस्मिन्व्यह : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

► सूस्तुल फ़तिहा :

لَحْمَدُ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ۝
اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِیْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۝ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّالِّیْنَ ۝ اٰمِیْن

► सूस्तुल इस्लामास : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُولَدْ ۝ وَلَمْ یَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

► तस्बीहे रुकूअ : سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ ۝

► तस्मीअ : سَمِعَ اللّٰهُ لَهْنَ حَمْدًا ۝

► तहमीद : رَبَّنَا وَاَلَك الْحَمْدُ ۝

► तस्बीहे सज्दा : سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی ۝

► तशहूद : السَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوٰتُ وَالطَّیِّبٰتُ السَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ
وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ فَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِیْنَ ۝
اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۝

﴿ کورہ ذراہیم : ﴾ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

﴿ کورہ ماسورہ : ﴾ اَللّٰهُمَّ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۙ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۙ رَبَّنَا اَغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدِيْ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

﴿ سلام : ﴾ السَّلَامُ عَلَیْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ۙ

﴿ کورہ کونوت : ﴾ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ
وَنَتَوَكَّلُ عَلَیْكَ وَنُشْفِيْ عَلَیْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ
وَنَتْرِكُ مَنْ يَفْجُرُكَ ۙ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَآلِیْكَ
نَسْعِيْ وَنُحْفِدُ وَنَرْجُو رَحْمَتَكَ وَنَخْشَى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَفٰرِ لَمُلْحِقٌ ۝

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلٰى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا صَلُّوا
عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيْمًا ۝

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعَدِنِ الْجُودِ وَالْكَرَمِ وَالْاِيْمِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ۙ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुवाल व जवाब

सुवाल नं. 1 हुरूफ़े मुफ़दात कितने हैं? सबक नम्बर 1

जवाब हुरूफ़े मुफ़दात 29 हैं।

सुवाल नं. 2 हुरूफ़े मुस्ता'लिया कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक नम्बर 1

जवाब हुरूफ़े मुस्ता'लिया सात हैं और वोह येह हैं - خ , ص , ض , ط , ظ , غ , ق -

सुवाल नं. 3 हुरूफ़े मुस्ता'लिया को कैसे पढ़ते हैं और इन का मज्मूआ क्या है? सबक नम्बर 1

जवाब हुरूफ़े मुस्ता'लिया को हमेशा हर हालत में पुर या'नी मोटा पढ़ते हैं और इन का मज्मूआ
 هَا هِيَ صَغَطٍ قَطٍ है।

सुवाल नं. 4 होंटों से अदा होने वाले हुरूफ़ कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक नम्बर 1

जवाब होंटों से अदा होने वाले हुरूफ़ चार हैं: ب , ف , م , و

सुवाल नं. 5 हुरूफ़े सफ़ीरिया या 'नी सीटी वाले हुरूफ़ कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक नम्बर 1

जवाब हुरूफ़े सफ़ीरिया या 'नी सीटी वाले हुरूफ़ तीन हैं: ز , س , ص

सुवाल नं. 6 हरकात किसे कहते हैं? सबक नम्बर 3

जवाब ज़बर — , ज़ेर — , पेश — को हरकात कहते हैं।

सुवाल नं. 7 हरकात को किस तरह पढ़ेंगे? सबक नम्बर 3

जवाब हरकात को बिगैर खींचे, बिगैर झटका दिये मा'रूफ़ पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 8 तन्वीन किसे कहते हैं? सबक नम्बर 5

जवाब दो ज़बर — , दो ज़ेर — और दो पेश — को तन्वीन कहते हैं। तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आखिर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की तरह होती है।

सुवाल नं. 9 हुरूफ़े मद्दा कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक नम्बर 7

जवाब हुरूफ़े मद्दा तीन हैं और वोह येह हैं اَلِف , وَاو , يَا

सुवाल नं. 10 مَدَّ، وَاوْ، مَدَّ और مَدَّ कब होगा ? सबक नम्बर 7

जवाब مَدَّ से पहले ज़बर हो तो مَدَّ، وَاوْ साकिन से पहले पेश हो तो مَدَّ، مَدَّ साकिन से पहले ज़ेर हो तो مَدَّ होगा।

सुवाल नं. 11 हुरूफ़े मद्दा को कैसे पढ़ते हैं ? सबक नम्बर 7

जवाब हुरूफ़े मद्दा को एक अलिफ़ या'नी दो हरकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं।

सुवाल नं. 12 खड़ी हरकात किसे कहते हैं ? सबक नम्बर 8

जवाब खड़े ज़बर —, खड़े ज़ेर — और उल्टे पेश — को खड़ी हरकात कहते हैं।

सुवाल नं. 13 खड़ी हरकात को कैसे पढ़ते हैं ? सबक नम्बर 8

जवाब खड़ी हरकात को हुरूफ़े मद्दा की तरह एक अलिफ़ या'नी दो हरकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं।

सुवाल नं. 14 हुरूफ़े लीन कितने हैं और कौन कौन से हैं ? सबक नम्बर 9

जवाब हुरूफ़े लीन दो हैं وَاوْ और مَدَّ।

सुवाल नं. 15 हुरूफ़े लीन को किस तरह पढ़ते हैं ? सबक नम्बर 9

जवाब हुरूफ़े लीन को बिगैर खींचे बिगैर झटका दिये नरमी से मा'रूफ़ पढ़ते हैं।

सुवाल नं. 16 وَاوْ लीन और مَدَّ लीन कब होगा ? सबक नम्बर 9

जवाब وَاوْ साकिन से पहले ज़बर हो तो وَاوْ लीन और مَدَّ साकिन से पहले ज़बर हो तो مَدَّ लीन होगा।

सुवाल नं. 17 क़ल्क़ला के क्या मा'ना हैं ? सबक नम्बर 11

जवाब क़ल्क़ला के मा'ना जुम्बिश और हरकत के हैं या'नी इन हुरूफ़ के अदा होते वक़्त मख़रज में जुम्बिश सी होती है जिस की वजह से आवाज़ लौटती हुई निकलती है।

सुवाल नं. 18 हुरूफ़े क़ल्क़ला कितने हैं, कौन कौन से हैं और इन का मज्मूआ क्या है ? सबक नम्बर 11

जवाब हुरूफ़े क़ल्क़ला पांच हैं और वोह येह हैं د، ج، ب، ط، ق हुरूफ़े क़ल्क़ला का मज्मूआ قُطِبُ جَدِّ है।

सुवाल नं. 19 हुरूफ़े क़ल्क़ला में कब क़ल्क़ला ख़ूब ज़ाहिर होगा ? सबक नम्बर 11

जवाब जब हुरूफ़े क़ल्क़ला साकिन हों तो उन में क़ल्क़ला ख़ूब ज़ाहिर होगा।

सुवाल नं. 20 अगर क़ल्क़ला हुरूफ़े मुशद्द हों तो उन्हें कैसे पढ़ेंगे ? सबक नम्बर 11

जवाब जब क़ल्क़ला हुरूफ़े मुशद्द हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करेंगे।

सुवाल नं. 21 हम्ज़ए साकिना (ء، ا) को कैसे पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 11

जवाब हम्ज़ए साकिना (ء، ا) को हमेशा झटका दे कर पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 22 नून साकिन और तन्वीन के कितने काइदे हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 12

जवाब नून साकिन और तन्वीन के चार काइदे हैं और वोह येह हैं इज़हार, इख़फ़ा, इदग़ाम, इक्लाब।

सुवाल नं. 23 इज़हार का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 12

जवाब नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े हल्की में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इज़हार होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल नं. 24 हुरूफ़े हल्की कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 12

जवाब हुरूफ़े हल्की छः हैं और वोह येह हैं - ع، ه، ح، غ، خ -

सुवाल नं. 25 इख़फ़ा का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 12

जवाब नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़फ़ा में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इख़फ़ा होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना कर के पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 26 हुरूफ़े इख़फ़ा कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 12

जवाब हुरूफ़े इख़फ़ा पन्दरह हैं और वोह येह हैं
ت، ث، ج، د، ذ، ز، س، ش، ص، ض، ط، ظ، ف، ق، ك -

सुवाल नं. 27 तश्दीद किसे कहते हैं और तश्दीद वाले हर्फ़ को क्या कहते हैं ?

सबक नम्बर 13

जवाब तीन दन्दान ^۳ वाली शकल को तश्दीद कहते हैं जिस हर्फ़ पर तश्दीद हो उसे मुशद्द कहते हैं।

सुवाल नं. 28 نون मुशद्द और ميم मुशद्द में क्या होगा ?

सबक नम्बर 13

जवाब نون मुशद्द और ميم मुशद्द में हमेशा गुन्ना होगा।

सुवाल नं. 29 गुन्ना किसे कहते हैं और इस की मिक्दार क्या है ?

सबक नम्बर 13

जवाब नाक में आवाज़ ले जा कर पढ़ने को गुन्ना कहते हैं गुन्ना की मिक्दार एक अलिफ़ के बराबर है।

सुवाल नं. 30 मुशद्द हर्फ़ को किस तरह पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 13

जवाब मुशद्द हर्फ़ को दो (2) मर्तबा पढ़ेंगे एक मर्तबा अपने से पहले वाले मुतहर्रिक हर्फ़ से मिला कर और दूसरी मर्तबा खुद अपनी हरकत के मुताबिक़ ज़रा रुक कर।

सुवाल नं. 31 इदगाम का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 14

जवाब

नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफे यरमलून में से कोई हर्फ आ जाए तो इदगाम होगा । **و** और **ل** में बिगैर गुन्ना के बाकी चार में गुन्ना के साथ ।

सुवाल नं. 32 हुरूफे यरमलून कितने हैं और कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 14

जवाब

हुरूफे यरमलून छः हैं और वोह येह हैं: **و، ل، م، ر، ی**

सुवाल नं. 33 इक्लाब का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 14

जवाब

नून साकिन या तन्वीन के बा'द हर्फ **ب** आ जाए तो इक्लाब होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर इख़फ़ा करेंगे या'नी गुन्ना कर के पढ़ेंगे ।

सुवाल नं. 34 मीम साकिन के कितने काइदे हैं और वोह कौन कौन से हैं ?

सबक नम्बर 15

जवाब

मीम साकिन के तीन काइदे हैं और वोह येह हैं **इदगामे शफ़वी, इख़फ़ाए शफ़वी, इज़्हारे शफ़वी** ।

सुवाल नं. 35 इदगामे शफ़वी का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 15

जवाब

मीम साकिन के बा'द दूसरी **م** आ जाए तो मीम साकिन में इदगामे शफ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे ।

सुवाल नं. 36 इख़फ़ाए शफ़वी का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 15

जवाब

मीम साकिन के बा'द **ب** आ जाए तो मीम साकिन में इख़फ़ाए शफ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे ।

सुवाल नं. 37 इज़्हारे शफ़वी का काइदा सुनाएं ?

सबक नम्बर 15

जवाब

मीम साकिन के बा'द **ب** और **م** के इलावा कोई भी हर्फ आ जाए तो मीम साकिन में इज़्हारे शफ़वी होगा या'नी गुन्ना नहीं करेंगे ।

सुवाल नं. 38 तफ़्ख़ीम व तरकीक के क्या मा'ना हैं ?

सबक नम्बर 16

जवाब

तफ़्ख़ीम के मा'ना हर्फ को **पुर** पढ़ना और **तरकीक** के मा'ना हर्फ को **बारीक** पढ़ना है ।

सुवाल नं. 39 इस्मे जलालत अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के **ل** को कब **पुर** और कब **बारीक** पढ़ेंगे ? सबक नम्बर 16

जवाब

इस्मे जलालत अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के **ل** से पहले हर्फ पर ज़बर या पेश हो तो इस्मे जलालत अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के **ل** को **पुर** पढ़ेंगे और इस्मे जलालत अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के **ل** से पहले हर्फ के नीचे ज़ेर हो तो इस्मे जलालत अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के **ل** को **बारीक** पढ़ेंगे ।

सुवाल नं. 40 اَلْف को कब पुर और कब बारीक पढ़ेंगे?

सबक नम्बर 16

जवाब الف से पहले पुर हर्फ आ जाए तो الف को पुर और बारीक हर्फ आ जाए तो الف को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 41 ر को पुर पढ़ने की सूरतें बताएं?

सबक नम्बर 16

जवाब (1) ر पर ज़बर या पेश हो (2) ر पर दो ज़बर या दो पेश हो (3) ر पर खड़ा ज़बर हो (4) ر साकिन से पहले हर्फ पर ज़बर या पेश हो (5) ر साकिन से पहले अरिज़ी ज़ेर हो (6) ر साकिन से पहले ज़ेर दूसरे कलिमे में हो (7) ر साकिन के बा'द हुरूफ़े मुस्ता'लिया में से कोई हर्फ इसी कलिमे में हो तो इन सब सूरतों में ر को पुर पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 42 ر को बारीक पढ़ने की सूरतें बताएं?

सबक नम्बर 16

जवाब (1) ر के नीचे ज़ेर या दो ज़ेर हों (2) ر साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली इसी कलिमे में हो (3) ر साकिन से पहले ر साकिना हो तो इन सब सूरतों में ر को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 43 अरिज़ी ज़ेर किसे कहते हैं?

सबक नम्बर 16

जवाब कुरआने पाक में बा'ज कलिमात अलिफ़ से शुरू होते हैं और अलिफ़ पर कोई हरकत नहीं होती उन अलिफ़ पर जो भी हरकत लगा कर पढ़ेंगे वोह अरिज़ी हरकत होगी जैसे اِرْجِي के الف के नीचे ज़ेरे अरिज़ी है।

सुवाल नं. 44 मद के क्या मा'ना हैं इस के कितने सबब हैं और कौन कौन से हैं?

सबक नम्बर 17

जवाब मद के मा'ना दराज़ करना और खींचना है मद के सबब दो "2" हैं (1) हम्ज़ह (2) सुकून।

सुवाल नं. 45 मद की कितनी किस्में हैं और कौन कौन सी हैं?

सबक नम्बर 17

जवाब मद की छः "6" किस्में हैं और वोह येह हैं (1) मद्दे मुत्तसिल (2) मद्दे मुन्फ़सिल (3) मद्दे लाज़िम (4) मद्दे लीन लाज़िम (5) मद्दे अरिज़ (6) मद्दे लीन अरिज़।

सुवाल नं. 46 मद्दे मुत्तसिल कब होगा?

सबक नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह इसी कलिमे में हो तो मद्दे मुत्तसिल होगा।

सुवाल नं. 47 मद्दे मुन्फ़सिल कब होगा?

सबक नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह दूसरे कलिमे में हो तो मद्दे मुन्फ़सिल होगा।

सुवाल नं. 48 महे मुत्तसिल और महे मुन्फ़सिल को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक नम्बर 17

जवाब महे मुत्तसिल और महे मुन्फ़सिल को “ दो, अढ़ाई अलिफ़ ” या’नी “ चार या पांच हरकात ” की मिक्दार तक खींच कर पढ़ें ।

सुवाल नं. 49 महे लाज़िम कब होगा ? सबक नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा’द सुकूने अस्ली (ۛ ۛ) हो तो महे लाज़िम होगा ।

सुवाल नं. 50 महे लीन लाज़िम कब होगा ? सबक नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े लीन के बा’द सुकूने अस्ली (ۛ) हो तो महे लीन लाज़िम होगा ।

सुवाल नं. 51 महे लाज़िम और महे लीन लाज़िम को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक नम्बर 17

जवाब महे लाज़िम और महे लीन लाज़िम को “तीन अलिफ़ ” या’नी “ छः हरकात ” की मिक्दार तक खींच कर पढ़ें ।

सुवाल नं. 52 महे अरिज़ कब होगा ? सबक नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा’द अरिज़ी सुकून हो या’नी वक्फ़ की वजह से कोई हर्फ़ साकिन हो जाए तो महे अरिज़ होगा ।

सुवाल नं. 53 महे लीन अरिज़ कब होगा ? सबक नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े लीन के बा’द अरिज़ी सुकून हो या’नी वक्फ़ की वजह से कोई हर्फ़ साकिन हो जाए तो महे लीन अरिज़ होगा ।

सुवाल नं. 54 महे अरिज़ और महे लीन अरिज़ को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक नम्बर 17

जवाब महे अरिज़ और महे लीन अरिज़ को “ एक, दो या तीन अलिफ़ ” या’नी “ दो, चार या छः हरकात ” की मिक्दार तक खींच कर पढ़ें ।

सुवाल नं. 55 ज़ाइद अलिफ़ किसे कहते हैं और क्या उसे पढ़ते हैं ? सबक नम्बर 19

जवाब कुरआने पाक में बा’ज़ जगह अलिफ़ पर गोल दाएरा “ ۛ ” का निशान होता है ऐसे अलिफ़ को ज़ाइद अलिफ़ कहते हैं और इस अलिफ़ को नहीं पढ़ते ।

सुवाल नं. 56 صُنَوَانٌ، بُنْيَانٌ، دُنْيَاٌ और قُنُوَانٌ के नून साकिन में कौन सा क़ाइदा होगा ? सबक नम्बर 20

जवाब इन चार कलिमात में नून साकिन के बा’द हुरूफ़े यरमलून एक कलिमे में आने की वजह से इदग़ाम नहीं बल्कि इज़हारे मुल्लक़ होगा इस लिये इन कलिमात में गुन्ना नहीं करेंगे ।

सुवाल नं. 57 सक्तह किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 20

जवाब

आवाज़ रोक कर सांस लिये बिगैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे।

सुवाल नं. 58 तस्हील के क्या मा'ना हैं ?

सबक नम्बर 20

जवाब

तस्हील के मा'ना नरमी करना है या'नी दूसरे हम्ज़ह को नरमी के साथ पढ़ना।

सुवाल नं. 59 इमालह किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 20

जवाब

ज़बर को ज़ेर और الف को ی کی तरफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं।

सुवाल नं. 60 इमालह की ۱ کو किस तरह पढ़ेंगे ?

सबक नम्बर 20

जवाब

इमालह की ۱ کو उर्दू के लफ़्ज़ क़तरे की ۱ کو तरह पढ़ेंगे। या'नी ی नहीं बल्कि ۱ پढ़ेंगे।

सुवाल नं. 61 वक्फ़ के क्या मा'ना हैं ?

सबक नम्बर 21

जवाब

वक्फ़ के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं।

सुवाल नं. 62 वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो क्या करेंगे ?

सबक नम्बर 21

जवाब

वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो उस हर्फ़ को साकिन कर देंगे।

सुवाल नं. 63 वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो क्या करेंगे ?

सबक नम्बर 21

जवाब

वक्फ़ की हालत में कलिमे के आखिरी हर्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो उसे अलिफ़ से बदल देंगे।

सुवाल नं. 64 वक्फ़ की हालत में गोल ۱ “ ۱ ” हो तो क्या करेंगे ?

सबक नम्बर 21

जवाब

गोल ۱ “ ۱ ” पर ख़्वाह कोई भी हरकत हो उसे वक्फ़ में ۱ साकिन “ ۱ ” से बदल देंगे।

सुवाल नं. 65 नून कुली किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 21

जवाब

तन्वीन के बा'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है उसे नून कुली कहते हैं।

सुवाल नं. 66 गोल दाएरा “ ۱ ” वक्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

जवाब

येह वक्फे ताम और आयत मुकम्मल होने की अलामत है। इस पर ठहरना चाहिये।

सुवाल नं. 67

ا वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

जवाब

येह वक्फे लाजिम की अलामत है यहां जरूर ठहरना चाहिये।

सुवाल नं. 68

ب वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

जवाब

येह वक्फे मुल्लक की अलामत है यहां ठहरना बेहतर है।

सुवाल नं. 69

ج वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

जवाब

येह वक्फे जाइज की अलामत है यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना भी जाइज है।

सुवाल नं. 70

د वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

जवाब

येह वक्फे मुजव्वज की अलामत है यहां ठहरना जाइज मगर न ठहरना बेहतर है।

सुवाल नं. 71

ص वक्फ की कौन सी अलामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक नम्बर 21

जवाब

येह वक्फे मुरख़स की अलामत है यहां मिला कर पढ़ना चाहिये।

सुवाल नं. 72

و पर वक्फ की वजाहत फ़रमाएं ?

सबक नम्बर 21

जवाब

अगर आयत के ऊपर و "و" लिखा हो तो ठहरने और न ठहरने में इख़िलाफ़ है आयत के इलावा و लिखा हो तो न ठहरें।

सुवाल नं. 73

इअ़दह किसे कहते हैं ?

सबक नम्बर 21

जवाब

वक्फ करने के बा'द पीछे से मिला कर पढ़ने को इअ़दह कहते हैं।

सुवाल नं. 74

सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनने के लिये कौन सा वज़ीफ़ा पढ़ना चाहिये ?

सफ़हा नम्बर 7

जवाब

सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनने के लिये चलते फिरते يا خَيْر पढ़ना चाहिये।

सुवाल नं. 75

इल्म के पांच दरजात कौन कौन से हैं ?

सफ़हा नम्बर 7

जवाब

इल्म के पांच दरजात येह हैं (1) ख़ामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना (4) जो सीखा उस पर अमल करना (5) जो इल्म हासिल हुवा उसे दूसरों तक पहुंचाना।

सुवाल नं. 76 हाफिजे की मजबूती का वजीफ़ा बताइये ?

सफ़हा नम्बर 12

जवाब **يَا عَالِمِينَ** 7 बार और हर बार **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** के साथ सूरा अलम नशरह 21 मर्तबा पढ़ कर पानी पर दम कर के जिस बच्चे या बड़े का हाफिज़ा कमज़ोर हो उस को पिलाइये। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हाफिज़ा मजबूत हो जाएगा।

सुवाल नं. 77 सबक याद करने से पहले कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये ?

जवाब सबक याद करने से पहले अव्वल व आखिर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ **اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ** पढ़नी चाहिये।

सुवाल नं. 78 वुजू के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब वुजू के चार फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. पूरा चेहरा धोना 2. कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना 3. चौथाई सर का मसह करना 4. टख़नों समेत दोनों पाउं धोना।

सुवाल नं. 79 गुस्ल के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब गुस्ल के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. कुल्ली करना 2. नाक में पानी चढ़ाना 3. तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना।

सुवाल नं. 80 तयम्मुम के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब तयम्मुम के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. निय्यत 2. सारे मुंह पर हाथ फैरना 3. कोहनियों समेत दोनों हाथों का मसह करना।

सुवाल नं. 81 नमाज़ की कितनी शराइत हैं और कौन कौन सी हैं ?

जवाब नमाज़ की छः शराइत हैं और वोह येह हैं (1) त़हारत (2) सित्रे औरत (3) इस्तिक़बाले किब्ला (4) वक़्त (5) निय्यत (6) तक्बीरे तहरीमा।

सुवाल नं. 82 नमाज़ के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब नमाज़ के सात फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं !
(1) तक्बीरे तहरीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ
(5) सुजूद (6) का'दए अखीरा (7) खुरूजे बि सुन्इही।

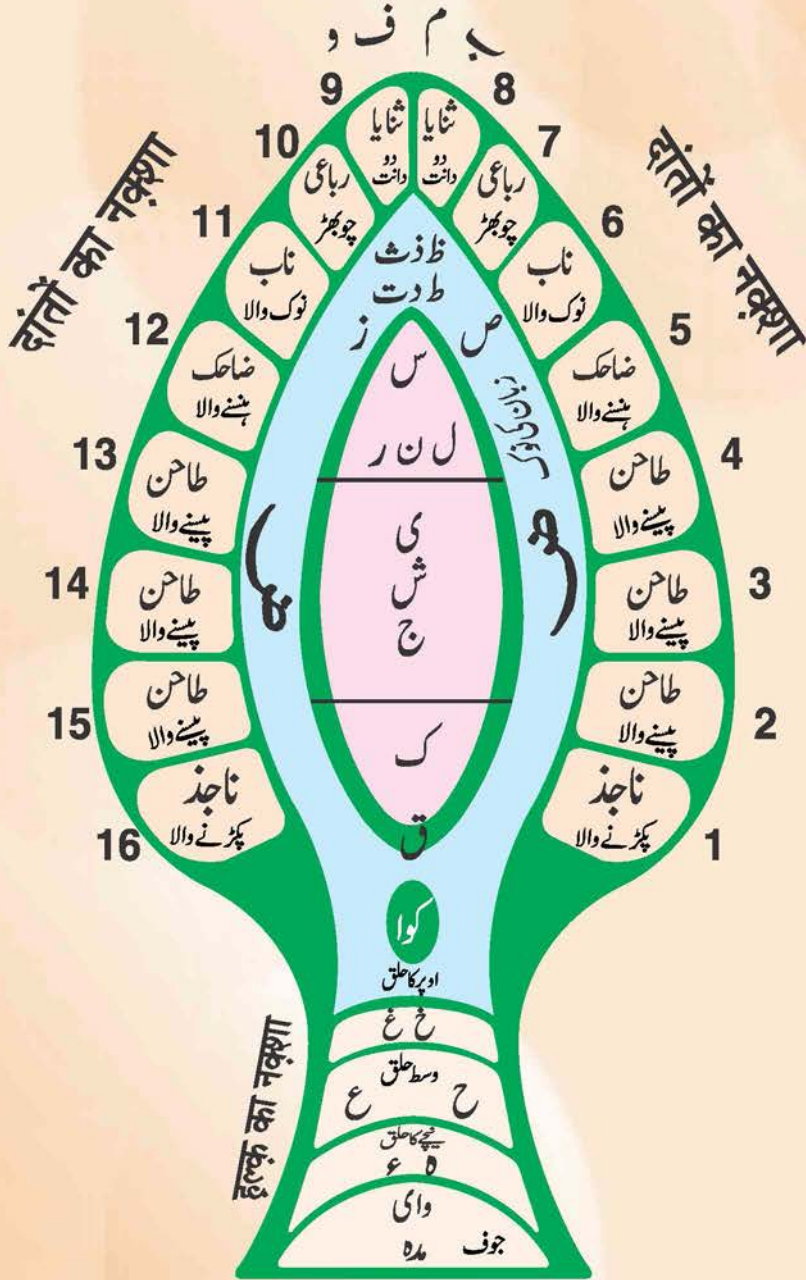
अल्लाह ! मुझे हाफिजे कुरआन बना दे

अज : शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा 'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी (دامت برکاتہم العالیہ)

अल्लाह ! मुझे हाफिजे कुरआन बना दे कुरआन के अहकाम पे भी मुझ को चला दे
हो जाया करे याद सबक जल्द इलाही ! मौला तू मेरा हाफिजा मज़बूत बना दे
सुस्ती हो मेरी दूर उठूं जल्द सबेरे तू मद्रसे में दिल मेरा अल्लाह ! लगा दे
हो मद्रसे का मुझ से न नुकसान कभी भी अल्लाह ! यहां के मुझे आदाब सिखा दे
छुड़ी न करूं भूल के भी मद्रसे की मैं अवक़ात का भी मुझ को तू पाबन्द बना दे
उस्ताद हों मौजूद या बाहर कहीं मसरूफ़ आदत तू मेरी शोर मचाने की मिटा दे
ख़स्लत हो मेरी दूर शरारत की इलाही ! सन्जीदा बना दे मुझे सन्जीदा बना दे
उस्ताद की करता रहूं हर दम मैं इताअत मां बाप की इज़ज़त की भी तौफ़ीक़ खुदा दे
कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़ मौला तू मदीना मेरे सीने को बना दे
फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही बस शौक़ मुझे ना 'तो तिलावत का खुदा दे
मैं साथ जमाअत के पढ़ूं सारी नमाज़ें अल्लाह ! इबादत में मेरे दिल को लगा दे
पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं और जि़क्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे
हर काम शरीअत के मुताबिक़ मैं करूं काश ! या रब तू मुबल्लिग़ मुझे सुन्नत का बना दे
मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे
मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे
अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे
उस्ताद हों, मां बाप हों, अत्तार भी हो साथ यूं हज को चलें और मदीना भी दिखा दे

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

مخاریجے ہرورف کا نکشا

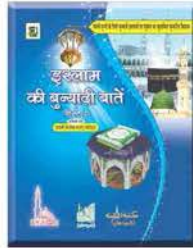
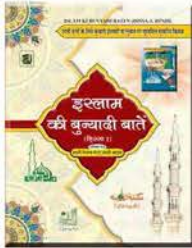


اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाजी बनने के लिए

हर जुमे'रात बा'द नमाजे मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिकत फ़रमाइये ❀ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी काफ़िले में आशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❀ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये ।

मेश मदनी मक्सद : "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है । **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ طَهَّل** " अपनी इस्लाह के लिये "नेक आ'माल" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**मदनी काफ़िलों**" में सफ़र करना है । **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ طَهَّل**



Dekhte Rahiye

DAWAE ISLAMI
INDIA



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, **Mumbai :** 19/20, Mohammed Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-8178862570 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, **Nagpur :** Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9327168200 ☎ +91-9326310099

🌐 www.maktabatulmadina.in 📧 feedbackmmhind@gmail.com

📦 For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025